मीडिया, राजनेताओं
व संतों की उठ रही है
अलग-अलग आवाज...।
सनातन धर्म को खत्म
करने के पीछे कैसे लगी हैं
राष्ट्र-विरोधी ताकतें...!
ईसाई मिशनरियों व
विदेशी कम्पनियों के
जाल में फँसा भारत!

एक अद्भुत खोज

आपकी आवाज

हिन्दी

खोजकर्ता : राजेश शर्मा व अन्य

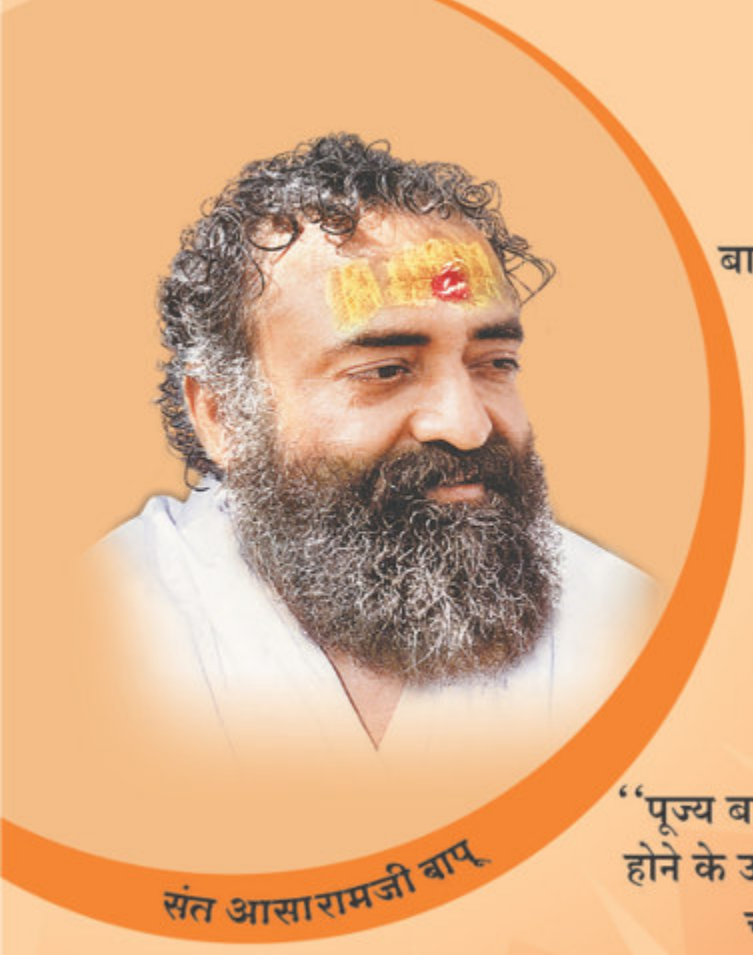

संत आसारामजी बापू

"सुख-शांति व स्वास्थ्य का प्रसाद बाँटने के लिए ही बापूजी का अवतरण हुआ है।"

– शंकराचार्य
श्री जयेन्द्र सरस्वती

"आप राजनीति के शिकार हुए हैं।"

– शंकराचार्य
श्री नरेन्द्रानंद सरस्वती

"पूज्य बापूजी की जीवन-गाथा ज्ञात होने के उपरांत कोई भी व्यक्ति उनके चरणों में नतमस्तक होगा।"

– डॉ. जयंत आठवलेजी

"बापूजी जागरण का शंखनाद कर रहे हैं।"

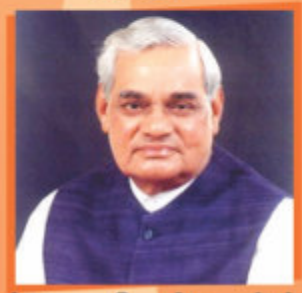

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

"बापूजी के शब्दों में एक यौगिक शक्ति रहती है।"

श्री नरेन्द्र मोदी

"पूज्य बापूजी को दैवी शक्ति प्राप्त है।"

श्री राजनाथ सिंह

"समाज को उन्नत जीवन की शिक्षा देने में बापूजी अग्रणी हैं।"

श्री मोहन भागवत

वटवृक्ष
पर किया शक्तिपात

पृष्ठ ७

इसकी परिक्रमा करने से मनोकामना पूर्ण होती है

मातृ-पितृ पूजन दिवस
मनाना शुरू करवाया

पृष्ठ ३

इससे ईसाईयत की जड़ें उखड़ रही हैं

हेलिकॉप्टर
गिरा

पृष्ठ १०

किसीको खरोंच तक नहीं आयी!

आपकी आवाज

हमेशा बसों, रेलगाड़ियों में, आम जनता के बीच चर्चा में बने रहनेवाले आसारामजी बापू ३.५ साल से जेल की सलाखों में कैद हैं। आसारामजी बापू नाम लेते ही सफेद कपड़े पहनी एक ऐसी ८० वर्षीय वयोवृद्ध मूर्ति सामने आती है जिसके पीछे ५ से ६ करोड़ लोग पागलों की तरह भागते नजर आते हों और सैकडों आश्रम, कई गुरुकुल, विभिन्न सेवा-प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती हों। इनकी हकीकत क्या है ? इनके भक्त हर देहात, शहर तो क्या कश्मीर से कन्याकुमारी तक और पूरे विश्वभर में फैले हुए हैं। बूढ़े, युवा, विद्यार्थी, स्त्री, पुरुष - सभी पर इन बाबा का रंग चढ़ा हुआ है।

अभी अक्सर जोधपुर जेल व न्यायालय परिसर के बाहर इनके भक्त पलकें बिछाये, हाथ जोड़े खड़े मिलते हैं। बाबा की गाड़ी गुजरने के बाद ये भक्त सड़कों की धूल सिर पर लगाते मिलेंगे। धार्मिक लोग इनको गोप-गोपियाँ तथा अहंकारी, घमंडी लोग इनको पागल बोलते हैं। हैरत तो तब होती है जब आसारामजी बापू को इतने आरोपों के बाद भी ये भगवान मानते हैं। बापूजी के बारे में मीडिया, राजनेता, महात्मा, जनता व इनके भक्त क्या कह रहे हैं, इसका भारतभर में सर्वेक्षण कर इन आवाजों को इकट्ठा किया गया है।

मीडिया की आवाज

➲ **युवती से छेड़छाड़** : संत आसारामजी के बढ़ते प्रभावों को खत्म करने के लिए शाहजहाँपुर (उ.प्र.) की युवती से छेड़छाड़ का झूठा मामला पुलिस में दर्ज करवाया गया। युवती की मेडिकल जाँच में क्लीन चिट मिली।

➲ **बच्चों की हत्या** : संत आसारामजी गुरुकुल, अहमदाबाद के २ बच्चों की मृत्यु जुलाई २००८ में हुई। ९ नवम्बर २०१२ को सर्वोच्च न्यायालय ने तांत्रिक विधि के आरोपों को खारिज करते हुए गुजरात उच्च न्यायालय के फैसले को सही माना कि बच्चों की मृत्यु नदी में डूबने से हुई थी।

➲ **आश्रम में तांत्रिक विधि** : सी.आई.डी. (क्राइम ब्रांच) व एफ.एस.एल. की बड़ी टीम ने जाँच के बाद पाया कि आश्रम में काला जादू, टोना-टोटका, तांत्रिक विधि यह सब नहीं होता।

संत आसारामजी के कारनामें

➲ **धर्मांतरण विरोधी** : संत आसाराम बापू धर्मांतरण के सख्त विरोधी तो हैं ही लेकिन जो लोग हिन्दू धर्म को छोड़कर ईसाई धर्म में चले गये थे, उनकी घर-वापसी का भी उन्होंने मार्ग प्रशस्त किया । हजारों-लाखों की भीड़वाला गुजरात का शबरी कुम्भ, मध्य प्रदेश का नर्मदा कुम्भ आदि बड़े-बड़े आयोजन बापूजी की उपस्थिति में आयोजित हुए, जिन्होंने भारत में ईसाई धर्मांतरण करनेवालों की जड़ें हिला दीं ।

➲ **पाश्चात्य कल्चर विरोधी** : भारतीयों को अपनी संस्कृति एवं नैतिकता से भ्रष्ट करने के लिए विदेशी ताकतें देश में न्यूज चैनलों, अखबारों, फिल्मों, मैगजीनों, इंटरनेट आदि माध्यमों के द्वारा अश्लीलता फैलाकर भोगवादिता और व्यसनों को बढ़ावा दे रही हैं । गर्भ-निरोधक साधन, कामोत्तेजक चलचित्र एवं ब्ल्यू फिल्में, कामोत्तेजक दवाइयाँ तथा पॉप संगीत बेचकर अरबों-खरबों डॉलर कमानेवाली विदेशी कम्पनियाँ इन बाजारों को तेज करने के लिए भारत के युवा-वर्ग को चरित्रभ्रष्ट कर रही हैं ।

संत आसारामजी सम्पूर्ण भारत में युवाधन सुरक्षा अभियान, नारी उत्थान कार्यक्रम, सत्संग आदि बहुत सारी सत्प्रवृत्तियों एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा व 'स्वदेशी वस्तु अपनाओ' आदि विभिन्न योजनाओं द्वारा लगभग ५ दशकों से विदेशी ताकतों के बद-इरादों को नाकाम करते आ रहे हैं ।

➲ **जुल्म-अन्याय विरोधी** : शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती की गिरफ्तारी के विरोध में संत आसारामजी अपने शिष्योंसहित दिल्ली की सड़कों पर जाकर बैठ गये थे । परिणामतः शंकराचार्यजी को रिहा करना पड़ा । रामलीला मैदान, दिल्ली में स्वामी रामदेवजी के ऊपर हुए अत्याचार का भी इन्होंने जमकर विरोध किया था । निर्दोष होते हुए ७ साल जेल की सजा भुगत चुके स्वामी केशवानंदजी को न्याय दिलाकर जेल से मुक्त कराया । पुलिस हिरासत में बंद साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर से जाकर मिले एवं उनके ऊपर हो रहे अत्याचार के विरोध में अनशन व आंदोलन करने की चेतावनी दी । इसी प्रकार स्वामी नित्यानंद, संत कृपालुजी महाराज आदि के ऊपर

लगवाये गये आरोपों का संत आसारामजी ने जमकर विरोध किया ।

➲ **लुटिया डुबा दी** : यू.पी.ए. की सोनिया सरकार द्वारा हो रहे घोटालों-भ्रष्टाचारों से जनता को परेशान देख बापूजी ने घोषणा कर दी : ''मैडम ! भारत छोड़ो !'' जैसे बाबा जय गुरुदेव ने इंदिरा के खिलाफ अभियान छेड़ा था तो इंदिरा ने बाबा को जेल में डाल दिया था, जिसके परिणामस्वरूप बाबा के संकल्प से इंदिरा की सरकार चली गयी थी । ऐसे ही सोनिया सरकार के शासन में बापूजी को भी षड्यंत्र के तहत जेल में डाल दिया गया । बापूजी का ऐसा संकल्प चला कि लोकसभा चुनाव २०१४ में काँग्रेस की लुटिया ही डूब गयी ।

➲ **नया त्यौहार शुरू करवाया** : हद तो तब हो गयी जब १४ फरवरी को ईसाईयत द्वारा चलाये गये **'वेलेंटाइन डे'** को भारत से अलविदा करने के लिए आसाराम बापू ने सन् २००७ से **'मातृ-पितृ पूजन दिवस'** मनाना शुरू करवाया । इसका ऐसा प्रचार हुआ कि मानो वेलेंटाइन डे को उखाड़ने का तांडव शुरू हो गया हो । मलेशिया, ईरान, सउदी अरब, रूस के बेल्गोरोद राज्य, इंडोनेशिया आदि अनेक देशों में वेलेंटाइन डे पर प्रतिबंध लग गया । 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' विश्वव्यापी हो गया, जिससे ईसाई जगत में खलबली मच गयी । इन बाबा ने जेल में रहते हुए भी २५ दिसम्बर को **'क्रिसमस डे'** के ही दिन **'तुलसी पूजन दिवस'** का नया त्यौहार तथा २५ दिसम्बर से १ जनवरी तक 'विश्वगुरु सप्ताह' अपने शिष्यों से मनाना शुरू करवा दिया । इस कार्यक्रम से व्यसन व आत्महत्याएँ कम होते देख दूसरे देशों ने भी इसे पसंद करना शुरू कर दिया है ।

बाबा के पीछे हो रहे षड्यंत्र के उपरोक्त मुख्य कारण हैं।

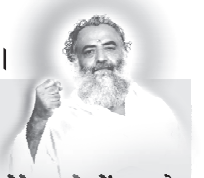

मैं आसाराम बापू बोल रहा हूँ

भारत को विश्वमानव की पीड़ा हरनेवाला बनाना है और बनेगा... ऐसी कई आत्माएँ प्रकट हो चुकी हैं, मेरे करोड़ों बच्चे भारत को 'विश्वगुरु' बनायेंगे ।... भारत विश्वगुरु बनकर ही रहेगा ।

संत आसारामजी को छुरा भोंक दिया !

➲ **पागल कुत्तों की दौड़** : संत आसारामजी खुलेआम अपने सत्संगों में धर्मांतरण के खिलाफ बोलते रहते थे व धर्मांतरण-विरुद्ध एवं स्वधर्म-पालन का साहित्य बँटवाते रहते थे। वे अलग-अलग क्षेत्रों में धर्मांतरण के कारणों को जानकर उसके निवारण हेतु भारत में बहुत सारी योजनाएँ व तमाम प्रकार की सेवाएँ चला रहे हैं, जैसे - गरीबों के लिए कार्ड द्वारा 'निःशुल्क अनाज-वितरण', अति गरीब बेरोजगारों व उनके परिजनों तथा खाली बैठे वृद्धों, अपाहिजों, विधवाओं के लिए 'भजन करो, भोजन करो, पैसा पाओ' योजना एवं चल-चिकित्सालय, बाल संस्कार केन्द्र, गुरुकुल आदि।

बापूजी की बढ़ती सेवा-प्रवृत्तियाँ व बढ़ते प्रभाव को खत्म करने के लिए ईसाई मिशनरियाँ व विदेशी ताकतें पागल कुत्तों की तरह दौड़ रही थीं लेकिन उन्हें निराशा हाथ लग रही थी। बापूजी अपने सत्संगों में बिना किसी शुल्क के स्वस्थ, सुखी व सम्मानित जीवन जीने की कला सिखाते थे। इनके कारण हिन्दुत्व, देशप्रेम की भावना, स्वदेशी व आयुर्वेदिक चीजों की माँग बढ़ रही थी, जिससे विदेशी कम्पनियाँ भी बौखलायी हुईं थी।

➲ **लोमड़ी की घात** : बापूजी के आश्रम से निष्कासित कुछ बगावती लोग भी मौके की तलाश में लोमड़ी की तरह घात लगाये बैठे थे। बापूजी से जिस पार्टी के लोग मार्गदर्शन व आशीर्वाद लेते रहे, उस पार्टी का वर्चस्व बढ़ गया तो मैडम सोनिया बापूजी से खार खाती रही।

ऐसे नेताओं व आश्रम से निकाले हुए कुछ बगावती लोगों की एक सशक्त टीम बनी व इनका मिशन बना 'बापू जीरो मिशन'। इन लोगों ने बापूजी के ऊपर २ केस लगवाये।

➲ **अर्धरात्रि को धोखा** : पहला केस बना जिसमें वेटिकन पोप और सोनिया-राहुल के इशारे पर काँग्रेसी नेताओं तथा वकीलों ने शाहजहाँपुर (उ.प्र.) की एक लड़की व उसके पिता को तैयार कर बापूजी पर यौन-शोषण के झूठे आरोप लगवाये। ८० वर्षीय निर्दोष संत को ३१ अगस्त २०१३ की अर्धरात्रि को धोखे से गिरफ्तार कर जोधपुर जेल में डाल दिया गया, जहाँ

काँग्रेस की सरकार में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत थे। दूसरा झूठा केस बना गुजरात में, जहाँ तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी थे। यहाँ पर भी बापूजी के ऊपर सूरत की महिला से बलात्कार का ही झूठा आरोप लगवाया गया।

➲ **पुलिस सुनने को तैयार नहीं** :संत आसारामजी पर बलात्कार का झूठा आरोप लगानेवाली सूरत की महिला ने गांधीनगर (गुज.) कोर्ट में एक अर्जी डालकर बताया कि उसने धारा १६४ के अंतर्गत (बापूजी के खिलाफ) पहले जो बयान दिया था वह कुछ लोगों के डर और भय के कारण दिया था। धमकाकर उससे दुष्कर्म का आरोप लगवाया गया था। अब वह सत्य उजागर करना चाहती है। उसने कई बार इसका खुलासा पुलिस के सामने किया लेकिन पुलिस कुछ सुनने को तैयार नहीं थी। पुलिस कहती थी कि उसका बलात्कारवाला बयान ही माना जायेगा। इसलिए आखिर उसे मीडिया के सामने बोलना पड़ा।

➲ **कैसे बचाओगे** : इस समय 'बापू जीरो मिशन' बहुत जोरों पर है। अब देखना यह है कि आसारामजी बापू, जो पिछले ५ दशकों से समाज की सेवा कर रहे हैं, उनको तथा जनता ने अपनी सुख-शांति व आध्यात्मिक उत्थान के लिए जो ४२५ से अधिक जगहों पर बापूजी के नाम से आश्रमों का निर्माण किया है, उनको जनता कैसे बचाती है।

इस प्रकार आश्रम से निकाले गये बगावती लोगों, कुछ स्वार्थी राजनेताओं व विदेशी कम्पनियों ने मिलकर हिन्दू संस्कृति को मिटाने के लिए संत आसारामजी की पीठ में छुरा भोंक दिया।

संत आसाराम बापू की आवाज

हम चाहते हैं कि सबका मंगल हो। दुर्जनों को भगवान जल्दी सद्बुद्धि दे, नहीं तो समाज सद्बुद्धि दे। जो जिस पार्टी में है... पद का महत्त्व न समझो, अपनी संस्कृति का महत्त्व समझो। पद आज है, कल नहीं है लेकिन संस्कृति तो सदियों से तुम्हारी सेवा करती आ रही है।

यह क्या किया संत आसारामजी ने ?

उस समय की बात है जब आप डीसा (गुज.) में अपने सद्गुरुदेव साँईं लीलाशाहजी के छोटे-से आश्रम में अकेले रहकर साधना करते थे। आपके पास बच्चे खेलते-खेलते आते थे तो आप भी बच्चों से विनोद करते थे। विनोद-विनोद में ही आप बच्चों से पूछते : ''किसको कौन-सी सुगंध चाहिए ?'' जो बच्चा जैसी सुगंध माँगता था, आप केवल उसके हाथ पर अपनी उँगली घुमा देते और उसको मुँहमाँगी सुगंध आने लग जाती थी इसलिए बच्चे आपको **'सुगंध बाबा'** भी कहते थे।

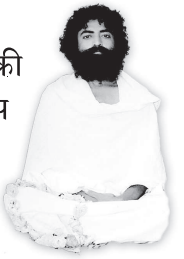

डीसा की ही बात है। एक दिन आप शाम को नदी की तरफ टहलने निकले थे कि रास्ते में **मरी हुई गाय** देख आप करुणावान हुए और गाय को **जिंदा कर दिया**। तब से वहाँ आपकी प्रसिद्धि बहुत बढ़ गयी थी। कुछ समय बाद आप डीसा छोड़ दूसरी जगह रहने लगे थे।

➲ **लगाया संकल्प का अदृश्य ताला** : ४ दशक पहले की बात है, जब आपके अहमदाबाद आश्रम का विस्तार नहीं हुआ था। एक बार आप अहमदाबाद की 'मोक्ष कुटिया' को ताला मार के सत्संग करने चले गये। चोर आये और उन्होंने ताला तोड़ दिया लेकिन आश्चर्य ! उनसे दरवाजा नहीं खुला। होल्डर (कब्जे) में जो लोहे का डंडा होता है, वह चिपका रहा। बाद में उन चोरों ने आपसे माफी माँगते हुए स्वयं सारी बात बतायी और कहने लगे : ''आप तो बड़े चमत्कारी बाबा हैं।''

➲ **लिया दो रूप** : ३ दशक पहले की बात है। शाम के समय आपका सत्संग चल रहा था, सबसे आगे बैठे सरदार नगर, अहमदाबाद (गुज.) के मंघनमलजी को अपनी मृतक साली का तीसरा मनाने जाना था लेकिन उन्होंने सत्संग के बीच में उठने का पाप नहीं किया। उनके अंतर्मन में चल रहा था, 'बापूजी ! क्या करूँ ?' मन में बड़ी उधेड़-बुन चलने के बाद भी सत्संग सुनते ही रहे। उधर इनकी मृतक साली के घर आप मंघनमल का शरीर धारण कर तीसरा मनाने पहुँच गये और लोगों को सांत्वना दी। मंघनमल जब सत्संग के बाद साली के घर जाकर माफी माँगने लगे, तब उन्हें हकीकत का पता

लगा और उनकी आँखों से प्रेम के आँसू बह चले ।

➲ **जब चाहे तब बारिश** : राजस्थान के छोटे-से शहर पीपाड़ में २८ व २९ जुलाई २००६ को आपका सत्संग था । यहाँ ३-४ साल से भारी अकाल था । लोगों ने आपसे प्रार्थना की । सत्संग के दौरान उपस्थित श्रद्धालु श्रोताओं से आपने पूछा : ''बरसात चाहिए ?'' सभीने एक स्वर में हामी भरी और समस्त सत्संग-मंडप में सन्नाटा छा गया । आप मौन हो गये । कुछ ही क्षणों में तेज बारिश शुरू हो गयी व बारिश के इंतजार में स्थानीय लोगों के मुरझाये हुए चेहरों पर खुशी छा गयी । तेज बरसात देखकर लोग चकित हो के नाचने लगे ।

➲ **टाल पर बाल** : हिसार (हरि.) में एक १४-१५ साल का बच्चा गंजा हो गया था । उसने एम्स आदि जगहों पर इलाज कराया पर निराशा हाथ लगी । आपके श्रीचरणों में बड़ी श्रद्धा से उसने इस बात को निवेदित किया । आपने कहा : ''तू रोज 'टाल रे टाल, आ जा बाल...' कहते हुए सिर पर हाथ घुमाया कर ।'' लड़का पूर्ण श्रद्धा के साथ लग गया और कुछ ही महीनों में टाल पर बाल आ गये । दोबारा मिलने पर लड़के ने आपश्री से पूछा : ''दूसरे लोग भी मंत्र माँग रहे हैं, दे दूँ क्या ?'' आपने कहा : ''वह कोई बाल आने का मंत्र नहीं है । तेरी पुकार थी तो गुरु के शुद्ध अंतःकरण से निकल गया ।''

➲ **मन्नत पूर्ण हो जाती है** : संत आसारामजी ने दर्जनों वटवृक्ष व कुटियाओं पर शक्तिपात किया है, जिनकी परिक्रमा कर मन्नत मानने से वह पूर्ण हो जाती है । आपके प्रसाद से हजारों निःसंतानों को संतानें हुई हैं । घर, दुकान या कहीं पर भी आपके श्रीचित्र की स्थापना करने से भूत-प्रेत, टोना-टोटका, कलह, अशांति आदि दूर हो जाते हैं । आपके शक्तिपात से लाखों लोगों की कुंडलिनी शक्ति जागृत हुई, रोग मिटे और साधना में उन्नति हुई । करोडों शिष्यों की यह अनुभूति है कि आप योगशक्ति के धनी हैं एवं भक्तों के काज सँवारते हैं ।

भक्तों की आवाज

सन् १९८५ से पूर्व की बात है, जब बापूजी के अहमदाबाद आश्रम आने के लिए सड़क नहीं बनी थी । एक सज्जन का प्रतिदिन शाम को बापूजी के दर्शन करने का नियम था । एक दिन उन्हें आने में देर हुई और अँधेरा हो गया । आश्रम से कुछ दूरी पर उनको कुत्तों ने बुरी तरह से घेर लिया । अब अंतर्मन में एक ही पुकार उठने लगी, 'बापूजी ! रक्षा करो, बापूजी ! रक्षा करो...' कुछ ही क्षणों में वे सज्जन क्या देखते हैं कि सामने से बापूजी बड़े जोरों की 'ॐ... ॐ...' की आवाज करते हुए टॉर्च लिये आ रहे हैं । 'ॐ... ॐ...' की आवाज से कुत्ते भाग गये ।

उन सज्जन ने झुककर प्रणाम किया । आश्रम के पास आकर बापूजी ने उनसे कहा : ''तुम हाथ-पैर धोकर सत्संग में आ जाओ ।''

वे सज्जन सत्संग में आकर बैठे और ५ मिनट में बापूजी उठकर चल दिये । उन्होंने और सत्संगियों से कहा : ''भाई ! आज बापूजी आये और ५ मिनट में ही चल दिये !'' लोगों ने कहा : ''क्या ? ५ मिनट... बापूजी तो ३ घंटे से सत्संग कर रहे हैं, तुम अभी आये !''

''अभी तो बापूजी हमको साथ लेकर आये !'' सभीने कहा : ''बापूजी ३ घंटे से कहीं गये ही नहीं ।'' तब उनको समझ में आया कि बापूजी ने दूसरा रूप लेकर उनकी रक्षा की । वे भावविभोर हो गये ।

➲ **लकवाग्रस्त महिला नाचने लगी** : ३० वर्षीय लकवाग्रस्त रजनी बाला निवासी - गुरु गोविंद नगर, पठानकोट (पंजाब) का काफी इलाज करवाया गया परंतु वे अपने पैरों पर खड़ी होने तथा बोल पाने में सक्षम नहीं थीं । बापूजी के अवतरण दिवस पर आयोजित सत्संग-संकीर्तन कार्यक्रम में इनको उठाकर लाया गया था । भजन-श्रवण करते-करते अचानक इनके हाथों से तालियाँ बजने लगीं तथा ये उठकर नाचने-गाने लगीं ।

➲ **अमेरिका में प्रकटे बापू** : बाबा के एक भक्त विनोद दिवेकर की

शिकागो (अमेरिका) में ऐसी जगह पर दुकान थी जहाँ चोरी होना आम बात थी। ये ७ मार्च २००८ की शाम को दुकान बंद कर चाबी ताले में ही लगी भूल के घर आ गये। ३ दिन बाद सुबह जल्दी-जल्दी दुकान आये तो देखा कि चाबी ताले में ही लगी है। दुकान खोली, सभी सामान सुरक्षित था। नियमित आनेवाले ग्राहक आकर कहने लगे कि ''तुमने आजकल कोई भारतीय रक्षक रखा है क्या, जो सफेद लम्बी दाढ़ीवाले हैं व सफेद लिबास में तुम्हारी दुकान की चौकी करते हैं ?'' उसने बापूजी का फोटो दिखाया तो ग्राहक बोले : ''ये ही हैं वे... !'' बापूजी तो भारत में थे लेकिन १२००० कि.मी. दूर दूसरा रूप धर भक्त की दुकान की रक्षा कर रहे थे !

➲ **५ साल के बच्चे ने कैसे चलायी कार** : दिल्ली में बाबा का एक शिष्य है तांशु। जब वह ५ साल का था तब ५ जुलाई २००५ को अपने चचेरे भाई हिमांशु आदि के साथ छत पर खेल रहा था। घर के सभी बड़े लोग बाहर गये थे। हिमांशु छत से एकाएक जमीन पर गिर पड़ा व बेहोश हो गया। सभी बच्चे बहुत चिंतित हो गये। एकाएक तांशु को बापूजी की प्रेरणा हुई, 'तांशु ! अपनी वैन में हिमांशु को लेटा व गाड़ी चलाकर हॉस्पिटल पहुँचा।' फिर क्या ! तांशु ने अपनी छोटी बहनों के सहारे हिमांशु को वैन में लिटाकर ५ कि.मी. से भी अधिक दूरी पर स्थित 'जीवन अनमोल हॉस्पिटल' पहुँचा के उसकी जान बचायी। तांशु की बहादुरी के लिए तत्कालीन राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलामजी ने उसे पुरस्कृत किया।

➲ **१०० शिष्याओं सहित बनी शिष्या बापूजी की** : ''आनंदमयी माँ मुझे दीक्षा देने के २.५ साल बाद ब्रह्मलीन हो गयीं। माँ के बिना मैं बहुत रोती-बिलखती थी। माँ ने एक दिन सपने में आकर कहा : ''तू बापूजी के पास चली जा, तेरी शेष साधना वहीं पूरी हो जायेगी।'' मैंने बापूजी से दीक्षा ले ली। उसके बाद तो मुझे बहुत आध्यात्मिक अनुभव हुए। मेरी जो १०० शिष्याएँ थीं, उनको भी बापूजी से दीक्षा दिलवायी। उनका भी आध्यात्मिक उत्थान हुआ।'' - कमल देवी, ओशिवारा, अँधेरी (मुंबई)

➲ **मिला अक्षय पात्र** : कतारगाम, सूरत (गुज.) के भक्तों को बापूजी ने गरीबों में भंडारा करने हेतु थोड़ा-सा सामान दिया। सामान सिर्फ दो दिन तक बँट सके उतना ही था इसलिए भक्त सोच रहे थे कि 'बापूजी १० दिन तक बाँटने के लिए कह रहे हैं !' लेकिन चमत्कार ! सामान खुले हाथों १० दिन तक बँटता रहा पर खत्म होने का नाम नहीं ! इस आश्चर्य को देख भक्तों ने सामान की गणना की तो जितना सामान बापूजी ने दिया था, उससे भी अधिक बाँटने पर भी बचा था। अंतिम दिन एक तपेला चावल बचा था जो करीब १०० लोगों में बँट सकता था। और आश्चर्य ! उसे भक्त ५ गाँवों में बाँटते रहे लेकिन खत्म नहीं हो रहा था ! बापूजी से प्रार्थना करने पर वह खत्म हुआ। इस अक्षय पात्र की लीला को भक्तों ने प्रणाम किया।

ओरा वैज्ञानिक डॉ. हीरा तार्पड़िया की आवाज

''मैंने अब तक लगभग सात लाख से भी ज्यादा लोगों की आभा ली है। संत श्री आसारामजी की आभा का अध्ययन कर मैंने पाया कि इनमें शक्ति देने की क्षमता है। बापूजी आध्यात्मिकता के शिरोमणि हैं।

बापूजी का सहस्रार चक्र, आज्ञा चक्र इतनी ऊँचाई तक विकसित हो चुका है जिसके आगे कोई परसेंटेज ही नहीं है। वे पूर्णता की पराकाष्ठा पर पहुँचे हुए हैं। आज तक जितने भी लोगों की आभाएँ मैंने ली हैं, किसीको भी इतना उन्नत नहीं पाया है। पिछले कम-से-कम दस जन्मों से बापूजी समाजसेवा का यह पुनीत कार्य करते आ रहे हैं। मुझे पिछले दस जन्मों तक का ही पता चल पाया, उसके पहले का पढ़ने की क्षमता मशीन में नहीं थी।''

२९ अगस्त, २०१२ में एक हेलिकॉप्टर मोरबी से गोधरा जा रहा था। गोधरा के सत्संग पंडाल के नजदीक साइंस कॉलेज परिसर में हेलिपैड बना था। शाम ३:४० पर भक्तों की भीड़ में हेलिकॉप्टर आकाश से जमीन पर मुँह के बल गिरा, पुर्जे चकनाचूर हो गये, आग लग गयी लेकिन किसीको खरोंच तक नहीं आयी ! अंदर बैठे चारों के चारों ज्यों-के-त्यों ! जानते हैं उसमें कौन सवार था ? **आसाराम बापू** !!!

संत आसारामजी की जीवन लीला

➲ **बचपन** : आसारामजी का जन्म १ मई १९३७ को अखंड भारत के सिंध प्रांत के नवाबशाह जिले में सिंधु नदी के तट पर स्थित बेराणी गाँव में हुआ। आपके बचपन का नाम आसुमल था। सन् १९४७ में भारत-पाक विभाजन के समय अहमदाबाद के मणिनगर में इनका परिवार आ बसा और यहीं पर इन्होने स्कूली शिक्षा पायी।

➲ **जंगल यात्रा** : आसुमल २३ फरवरी १९६४ को घर छोड़कर आत्मसाक्षात्कार के लिए उत्तराखंड की गिरि-गुफाओं में विचरण करने लगे। मौत का मुकाबला करते-करते नैनीताल के बीहड़ों में जा पहुँचे। वहाँ साँईं लीलाशाहजी के दर्शन हुए। उन्होंने आसुमल को शिष्यरूप में स्वीकारा। ७ अक्टूबर १९६४ को वज्रेश्वरी (मुंबई) में सद्गुरुकृपा से आसुमल को आत्मसाक्षात्कार हुआ। सद्गुरु साँईं लीलाशाहजी ने आसुमल का नाम 'आसाराम' रखा।

➲ **साधना** : आत्मसाक्षात्कार के बाद आसारामजी ७ वर्ष तक डीसा (गुज.) व माउंट आबू की नल गुफा में रहें। वहाँ इन्होने ध्यानयोग, ज्ञानयोग, लययोग, कुंडलिनी योग आदि की सिद्धियाँ प्राप्त कीं। योगसम्पन्न साँईं लीलाशाहजी ने आशीर्वाद दिया : ''आसाराम ! तू गुलाब होकर महक, तुझे जमाना जाने।''

➲ **विदेश यात्रा** : संत आसारामजी ने विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार सन् १९८४ से १९९३ तक बड़े जोर-शोर से किया। सन् १९९३ के शिकागो में आयोजित 'विश्व धर्म संसद' के ६०० से अधिक वक्ताओं में भारत के प्रतिनिधि संत आसारामजी का बहुत बोलबाला रहा। इनको तीन दिन घंटों-घंटों तक बोलने का समय दिया गया।

➲ **सेवा संस्थान** : संत आसारामजी के वर्तमान में ४२५ से अधिक आश्रम, अनेक गौशालाएँ (८००० से अधिक गाय), १४०० समितियाँ, हजारों निःशुल्क बाल संस्कार केन्द्र तथा ४० गुरुकुल व डिग्री कॉलेज हैं। प्रति माह 'ऋषि प्रसाद' व 'लोक कल्याण सेतु' पत्रिका का प्रकाशन होता है।

सद्गुरु स्वामी लीलाशाह

संत आसारामजी बापू के सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी का जन्म सन् १८८० में सिंधु नदी-किनारे स्थित महराब चांडाई नामक गाँव में ब्रह्मक्षत्रिय कुल में हुआ था। आपका पूर्व का नाम लीलाराम था। एक बार हिन्दू-मुस्लिम जमीन विवाद में हिन्दू भाई आपको आग्रह करके ले गये। उस जमीन पर खड़े एक नीम के पेड़ से सीमा-निर्धारण के बारे में कुछ विवाद था।

आपने उस पर दृष्टि डालकर आदेश किया : ''ऐ नीम ! असली हद पर जा !'' तो पेड़ 'सर्रर्... सर्रर्...' चलकर असली सीमा पर गया !

मुस्लिम भाई हिन्दू भाइयों से बोले : ''ये आपके ही पीर नहीं हैं, आपके और हमारे सबके पीर हैं। अब से ये लीलाराम नहीं, लीलाशाह हैं।'' तब से लोग आपका 'लीलाराम' नाम भूल ही गये और 'लीलाशाह' नाम से पुकारने लगे। आपके आशीर्वाद से बहुतों को जीवनदान मिला, अनेकों के रोग-शोक, व्यसन छूटे व कितने ही निःसंतानों को संतान मिली। असंख्य लोगों को पारमार्थिक व आध्यात्मिक लाभ हुए।

➲ **चलती गाड़ी को रोक दिया** : स्वामीजी आदिपुर (जि. कच्छ, गुज.) के लिए पैदल जा रहे थे कि दृष्टि गोपालपुरी रेलवे स्टेशन से छूटी चलती ट्रेन पर पड़ी। शिष्य ने कहा : ''स्वामीजी ! यह रेल आदिपुर जा रही है, जहाँ हमको जाना है।'' स्वामीजी ने कहा : ''उसे कह कि 'रुक जा माई ! रुक जा...'' शिष्य ने वैसा ही कहा और रेल रुक गयी। आप रेल में चढ़ गये। फिर शिष्य को कहा : ''जा, तू स्टेशन से टिकट ले आ।''

शिष्य टिकट लाकर ज्यों बैठा, स्वामीजी ने कहा : ''अरे, ऐसे कैसे बैठ गया ! तूने गाड़ी को रोका है तो अब ले यह कमंडल, इसमें से पानी लेकर इंजन पर छींटे मार और बोल कि 'चल माई ! चल...' और आश्चर्य ! ऐसा करने पर गाड़ी चलने लगी।

➲ **दुःखभंजन कुआँ** : आदिपुर में एक टूटे हुए कुएँ को स्वामीजी ने ठीक करवाया। लोगों ने कहा : ''स्वामीजी ! कुएँ का पानी खारा है।'' स्वामीजी

ने कहा : ''फिक्र मत करो, अब यह पानी पेट की बीमारियाँ व कब्ज दूर करेगा तथा पाचनशक्ति ठीक रखेगा।'' उस कुएँ का आपने नाम रखा 'हरि हाजमेदार दुःखभंजन कुआँ'। सचमुच, उस कुएँ से कई बीमारों को लाभ हुआ।

➲ **विनोद में भी दुःख-चिंता हर लेते :** सन् १९५९ की बात है। स्वामीजी के सत्संग में एक सज्जन आते थे। उनके विवाह को १७ साल हो गये थे पर कोई संतान नहीं हुई थी। बड़े-बड़े डॉक्टरों ने कह दिया था : ''बच्चा होना नामुमकिन है।''

स्वामीजी ने उस व्यक्ति की तरफ इशारा करते हुए सत्संगियों को कहा : ''भाई ! प्रभु के नाम पर एक ताली बजाओ कि इसे संतान मिले।'' सभीने ताली बजायी। स्वामीजी ने कहा : ''एक बार और ताली बजाओ।'' पुनः सभीने बजायी। इस तरह तीन बार ताली बजवायी। कुछ समय बाद उस दम्पति को तीन संतानें हुईं। ऐसे तो न जाने कितनों की स्वामीजी हँसते-हँसते विनोद में ही दुःख-चिंता हर लेते, झोली भर देते व मनोरथ पूर्ण कर देते थे, जिसका कोई हिसाब नहीं है।

➲ **भगवान तो मेरा बेटा है :** सत्संग पूरा करने के बाद स्वामीजी ने भक्तों को कहा : ''बेटे ! सभी अपने-अपने घर जाओ।''

एक शिष्य ने कहा : ''स्वामीजी ! बारिश हो रही है, भगवान को कौन बोले ?'' तब स्वामीजी ने हँसकर कहा : ''भगवान तो मेरा बेटा है।''

''स्वामीजी ! तो आप अपने बेटे को कहिये कि बारिश बंद करे।''

स्वामीजी ने हाथ ऊपर करके कहा : ''बेटे ! बारिश बंद करो।'' इतना कहते ही थोड़े समय में बारिश बंद हो गयी, सभी अपने-अपने घर पहुँच गये। इसके बाद पुनः बारिश शुरू हो गयी !

एक बार स्वामीजी खुले मैदान में सत्संग कर रहे थे। अचानक बारिश शुरू हुई और काफी तेज हो गयी। स्वामीजी ने ऊपर उँगली करके कहा : ''ईश्वर ! सत्संग तो करने दे, सत्संग में विघ्न मत डाल।'' इतना कहना ही था कि बारिश बंद हो गयी और बादल गायब हो गये !

संत आसारामजी की विचारधारा

★ प्रसन्नता धर्म की देन है, धन की नहीं।

★ अपने को स्वार्थ से बचाना यह अपनी सेवा है।

★ महान बनने की यही शर्त है : संयम और सदाचार।

★ भगवान की भक्ति होती है तो युक्ति भी सूझती है।

★ आत्मज्ञान के आगे और सब ज्ञान छोटे रह जाते हैं।

★ गंदी-अश्लील पुस्तकें पढ़ना तथा फिल्में देखना अपनी तबाही को बुलाना है।

★ पद मिले, सत्ता मिले तो अपनी संस्कृति की सेवा करो।

★ आप मुसीबतों से खेलो, मुसीबतों को देखकर डरो मत।

★ कितनी भी मुसीबत आये, भगवान का रास्ता नहीं छोड़ना।

★ ईश्वर में प्रीति करने से सभी समस्याओं का समाधान होता है।

★ सुखी, स्वस्थ व सम्मानित जीवन सभीका जन्मसिद्ध अधिकार है।

★ जीवन को यदि तेजस्वी, सफल और उन्नत बनाना हो तो मनुष्य को त्रिकाल संध्या जरूर करनी चाहिए।

★ संसार में अगर सुखी रहना हो तो दूसरों की की हुई बुराई और अपनी की हुई भलाई को भूल जाओ।

★ मनुष्य-जन्म पाकर भी शोक, चिंता, भय और भविष्य के लिए सशंकित रहे तो बड़ी शर्म की बात है !

★ अज्ञानी के रूप में जन्म लेना कोई पाप नहीं पर प्रभु से विमुख होकर मर जाना महापाप है।

★ जो अपने धर्म (कर्तव्य) में दृढ़ रहता है उसका प्रभाव भी बना रहता है। स्वार्थ आदमी को गुमराह कर देता है।

★ अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए सीमा पर तैनात प्रहरी की तरह सदैव सावधान रहो।

राजनेताओं की आवाज

☞ आसाराम बापू को खड़े होकर हमने जेल में बंद करवाया।
- शरद यादव (जे.डी.यू. अध्यक्ष)

☞ ''मैं मानता हूँ कि बापू के शब्दों में एक यौगिक शक्ति रहती है।''
- नरेन्द्र मोदी, वर्तमान प्रधान मंत्री, तत्कालिन मुख्यमंत्री, गुजरात

☞ ''हमारे परम पूज्य बापूजी को दैवी शक्ति प्राप्त है।''
- राजनाथ सिंह, वर्तमान केन्द्रीय गृहमंत्री

☞ ''आसाराम बापू के साथ बहुत बड़ा अन्याय हुआ है।...''
- सुब्रमण्यम स्वामी, राज्यसभा सांसद

☞ ''जगत के हित और प्यारों के कल्याण के लिए बापूजी ने यह देह धारण की है।'' **- शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश**

☞ ''सनातन धर्म का संरक्षण करते हुए समाज के सभी वर्गों को उन्नत जीवन की शिक्षा देने में बापूजी अग्रणी हैं।'' **- मोहन भागवत, सरसंघचालक**

संतों की आवाज

☞''परम पूज्य आसारामजी बापू की जीवनगाथा ज्ञात होने पर कोई भी व्यक्ति जिसे भगवान में आस्था है, उनके चरणों में नतमस्तक होगा।'' **- डॉ. जयंत आठवलेजी, सनातन संस्था**

☞ ''सुख-शांति व स्वास्थ्य का प्रसाद बाँटने के लिए ही बापूजी का अवतरण हुआ है।'' **- शंकराचार्य जगद्गुरु श्री जयेन्द्र सरस्वती**

☞ ''पूज्य बापूजी के खिलाफ षड्यंत्र किया गया है। गलत आरोप लगा के उनको प्रताड़ित किया जा रहा है।'' **- महंत श्री नरेन्द्र गिरि**
अध्यक्ष अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

☞ ''कायदे से आसाराम बापू राजनीति के शिकार हुए हैं। अगर बापू जैसे संतों को जेल में डालकर बदनाम करने का षड्यंत्र होता रहा तो भारत की अस्मिता, संस्कृति सुरक्षित नहीं रह पायेगी।'' **- सुमेरु पीठाधीश्वर**
जगद्गुरु, शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानंद सरस्वती

बोरिया बाबा की आवाज प्रधानमंत्री के नाम

महान संत बोरियाबाबा केनाराम परंपरा के ३५० वर्ष तक जिवित रहने वाले बाबा बैताली राम के शिष्य हैं ।

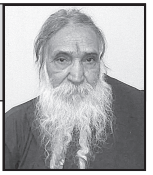

✧ काँग्रेस पार्टी ने ८० वर्षीय संत आसारामजी बापू को लगभग साढ़े तीन वर्ष पहले एक झूठे मुकदमे में फँसाकर जेल भेज दिया था । मैडम सोनिया ने अपनी हुकूमत में और भी बड़े-बड़े हिन्दू संतों को खूब सताया है । अब मैडम सोनिया व उसके पुत्र के कर्म पूरे हो चुके हैं, उनका राजपाट छिन चुका है । अब दोनों ही असहाय होकर घूम रहे हैं ।

✧ संत आसारामजी बापू पिछले ५० वर्षों से इस देश की सेवा में जुटे हुए थे । अपने सत्संग, गुरुकुलों व गौशालाओं के जरिये वे भारत की सनातन संस्कृति, धर्म व गौमाता की खूब-खूब सेवा कर रहे थे । देश में ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दुओं को धड़ाधड़ ईसाई बनाये जाने के कामों में इससे रोक भी लग रही थी और इसी कारण से मैडम सोनिया उनसे नाराज हो गयी ।

✧ देश के लोगों को पूरी उम्मीद थी कि मोदीजी की सरकार आ जाने पर संत आसारामजी बापू को इंसाफ तुरंत मिल जायेगा इसीलिए देश के बड़े-बड़े साधु-संतों ने भी भाजपा की जीत के लिए खूब-खूब प्रार्थनाएँ, यज्ञ तथा भंडारे किये थे ।

✧ मोदीजी ! मेरा आपसे कहना है कि जिस राजा के राज में संत सताये जायें तथा संत-महात्मा भयभीत होकर रहें तो उस राजा का भविष्य कतई उज्ज्वल नहीं है । संत आसारामजी बापू एक निर्दोष संत हैं, आप सम्मान के साथ उनकी आजादी का जल्दी-से-जल्दी प्रबंध कर दें । संतों को सतानेवाले राजा का तेज, प्रताप बीच में ही नष्ट हो जाता है, वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता ।

('आदर्श पंचायती राज' पत्रिका, दिसम्बर २०१६ से साभार)

संदर्भ

✷ लीलाशाह दर्शन ✷ आसाराम बापू खतरा या साजिश ✷ ऋषि प्रसाद (मासिक पत्रिका)- अंक १७४, १८१, १८५, १८७, २२२, २६९, २७९, २८७ ✷ लोक कल्याण सेतु (समाचार पत्र) ✷ जीवन सौरभ ✷ दैनिक जागरण, पठानकोट, १० अप्रैल २००७ इत्यादि।

साँईं श्री लीलाशाहजी

को आशीर्वाद दिया

चलती गाड़ी को रोक दिया

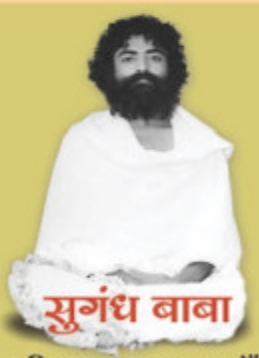

ही आसाराम बापू हैं

इसी कुटिया में लगाया था अदृश्य ताला

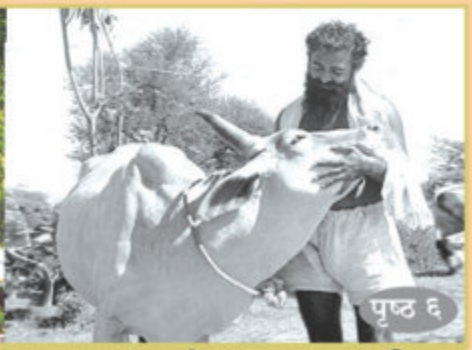

मृत गाय को जीवनदान दिया

संस्कृति पर कुठाराघात

साधु-संतों पर अत्याचार

जेल में घोर अन्याय

स्वामी अमृतानंद देवतीर्थ

जेल में आजीवन रखने की साजिश

संत आसारामजी बापू

जेल में खत्म करने की साजिश

साध्वी प्रज्ञा सिंह

जेल में शोषण व प्रताड़ना

संत नारायण साँईं

जेल में प्रताड़ना

स्वामी असीमानंद

देशभक्ति से भरपूर पुस्तक जनजागरण हेतु अवश्य बाँटें

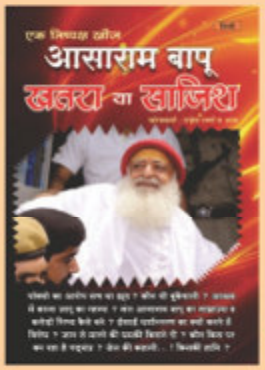

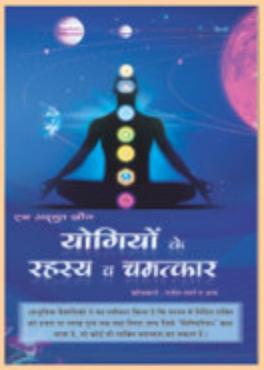

पुस्तक मँगवाने हेतु सम्पर्क करें :
९३७६४२७२००,
(०११)
३२६७४१२६,

आवाज सुनो ! विचित्र कारनामों की।
अत्याचार व अद्भुत चमत्कारों की ॥

- काँग्रेस की लुटिया किसने डुबा दी ?
- संत की जीवनलीला, कारनामे आदि क्या हैं ?
- बाबा के पीछे पागलों की तरह क्यों भागते हैं लोग ?
- बोरिया बाबा प्रधानमंत्री को क्यों आवाज लगा रहे हैं ?
- सनातन संस्कृति को मिटाने हेतु संत को किसने छुरा भोंक दिया ?
- संत के लिए पागल कुत्तों की दौड़, लोमड़ी की घात व अर्धरात्रि को धोखा - यह सब क्यों हो रहा है ?
- संत ने बरसात करवा दी, दो रूप ले लिये, बच्चे की टाल पर बाल ला दिये, अदृश्य ताला लगाकर क्यों चले गये ?
- संत आसारामजी के चमत्कारों के पीछे किसका हाथ तथा इनके भक्त क्यों नहीं मनाते 'वेलेन्टाइन डे' ?
- संत आसारामजी ने जंगल की यात्रा क्यों की और विदेश क्यों गये थे तथा धर्मांतरण रोकने के पीछे क्यों पड़े रहते हैं ?
- क्या सचमुच संत आसारामजी का हेलिकॉप्टर गिरा, चकनाचूर हुआ, आग लगी और उसमें सवार सभी लोग बच गये ?
- साँईं लीलाशाहजी ने पेड़ चला दिया, मृतक बालक जिंदा किया तथा अपनी सभी आध्यात्मिक शक्तियों को संत आसारामजी में क्यों समाहित कर दी ?

सर्व सहमति देश की जनता की... यह पुस्तक जनहित में जारी है। इसे कोई भी छपवा अथवा मँगवाकर बाँट सकता है। यह देश का सेवाकार्य कोई भी कर सकता है। पक्का देशभक्त देशहित में जरूर करेगा - हमें यह विश्वास है।

All legal proceedings shall be subject to the jurisdiction of the courts in New Delhi.

संस्कृति रक्षक संघ

आध्यात्मिक भारत निर्माण

मुख्यालय : शास्त्री नगर, दिल्ली-110031. फोन : 9376427200.
email: info@srsinternational.org www.srsinternational.org